वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 359
ISBN 978-93-82071-37-2

अभिषेक पाठ एवं नवदेवता पूजा

–: प्रस्तुति : –

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मदात्री परमपूज्य 105 आर्यिका श्री रत्नमती माताजी (समाधिस्थ) की 43वें दीक्षा दिवस- मगसिर कृ. तृतीया, 20 नवम्बर 2013 के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

Facebook : jaintirthjambudweep

द्वितीय संस्करण वीर नि. सं. 2540, मगसिर कृ. 3 मूल्य

1100 प्रतियाँ 20 नवम्बर 2013 16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

प्रथम संस्करण, सन् 2013-1100 प्रतियाँ

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

पीठाधीश की कलम से.....

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित साहित्य को सतत प्रकाशित करने के लिए पूज्य माताजी की ही पुण्य प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अन्तर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की भी स्थापना की गई, तब से लगातार इस ग्रंथमाला द्वारा साहित्य प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है।

इस ग्रंथमाला से जहाँ पूज्य माताजी द्वारा टीकाकृत षट्खण्डागम जैसे महान सिद्धान्त ग्रंथों तथा नियमसार, समयसार, गोम्मटसार, अष्टसहस्री, कातंत्र व्याकरण आदि जैसे मूल आगम ग्रंथों का प्रकाशन होता है, वहीं मुख्यतः पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी व प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित विभिन्न बड़े-छोटे पूजा-मण्डल विधान आदि का प्रकाशन भी समाज के लिए विशेष मांग हेतु बना रहता है। आज हम इस ग्रंथमाला को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानते हैं, जिसके माध्यम से प्रकाशित हो रहे सत् साहित्य का वर्ष भर पूरे 365 दिन भारत के कहीं न कहीं, किसी न किसी मंदिर में मण्डल विधान या साहित्य वितरण आदि के लिए मांग आती रहती है और जैनधर्म व भक्तिमार्ग की प्रभावना में यह ग्रंथमाला नित्य ही तत्पर रहती है।

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी का संक्षिप्त परिचय

जन्म–सन् 1914, मगसिर कृ. पंचमी

जन्मस्थान–महमूदाबाद (जिला-सीतापुर) उ.प्र.

माता-पिता–श्रीमती मत्तो देवी एवं सुखपालदास जैन

विवाह–सन् 1932 में टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. के श्रेष्ठी श्री धन्य कुमार जी के सुपुत्र श्री छोटेलाल जैन के साथ

पुत्र-पुत्रियाँ–गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी सहित 9 कन्याएँ एवं पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी सहित 4 पुत्र

दीक्षा–मगसिर कृ. 3, सन् 1971, अजमेर-राज. में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के करकमलों से

समाधि–माघ कृ. नवमी, 15 जनवरी 1985, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सान्निध्य में)

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र के विषय में आवश्यक जानकारी

ज्ञानपिपासु महानुभावों! जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर संस्थान द्वारा ''गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र'' का शुभारंभ वर्ष-२०१२ से किया गया है। इस परीक्षा केन्द्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य जैन श्रावक-श्राविकाओं को धर्म के ज्ञान से अभिसिंचित करना एवं उन्हें समाज में लब्ध प्रतिष्ठित करने हेतु विशेष डिग्री के माध्यम से सम्मानित करना है। इस परीक्षा केन्द्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के डिग्री कोर्स का शुभारंभ किया गया है, जिसे १२ वर्ष से अधिक उम्र के श्रावक-श्राविकाएँ ज्ञानाराधना के लिए ज्वाइन कर सकते हैं।

अवश्य पढ़ने योग्य नियमावली

कोर्स से संबंधित सामान्य जानकारी-

(१) परीक्षा केन्द्र द्वारा यह धार्मिक परीक्षा प्रणाली ''पत्राचार कोर्स'' के रूप में प्रारंभ की गई है।

(२) किसी भी कोर्स में भाग लेने हेतु प्रवेश 'निःशुल्क' रखा गया है।

(३) परीक्षा में भाग लेने के लिए उम्र सीमा १२ वर्ष से अधिक रखी गई है। जैनधर्म के ज्ञान का अर्जन करने के इच्छुक प्रत्येक श्रावक-श्राविकाएँ इसमें भाग ले सकते हैं।

(४) समस्त परीक्षाएँ पत्राचार के माध्यम से घर बैठे दी जा सकती हैं।

(५) परीक्षा में प्रवेश पाने हेतु वर्ष के दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह तक प्रवेश फार्म भरकर परीक्षार्थी को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पते पर आवश्यक रूप से पहुँचाना होगा।

(६) प्रवेश फार्म भरने के उपरांत आपको संस्थान द्वारा रोल नम्बर आदि के साथ विशेष प्रवेश-पत्र भेजा जायेगा, जिसे परीक्षा तक संभालकर रखना होगा।

(७) परीक्षा के प्रश्न-पत्र जून के अंतिम सप्ताह में संस्थान द्वारा डाक से आपके घर पहुँचाये जायेंगे।

(८) प्रश्नपत्र में उत्तर लिखने के उपरांत १५ जुलाई तक आपको उत्तर-पुस्तिका जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के कार्यालय पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा पहुँचाना अनिवार्य रहेगा।

(९) उत्तर पुस्तिका की जाँच जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के विद्वानों द्वारा की जायेगी और प्रमाण-पत्र के माध्यम से आपको परिणाम फल पहुँचाया जायेगा।

परीक्षा कोर्स एवं प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क करें-

जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर (संयोजक)

मो.-०९४११०२५१२४

मंगलाष्टकम्

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम् ।।१।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्।।२।।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्।।३।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थङ्करमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्।।४।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिङ्गता पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महानिमित्त-कुशला येऽष्टौ विधाश्चारणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्।।५।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणाऽवनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्।।६।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्।।७।।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्।।८।।

इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।९।।

।। इति मङ्गलाष्टकम्।।

पूजा मुख विधि[१]

(यह प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ के आधार से पूजा प्रारंभ की विधि मैंने प्रस्तुत किया है)

(अभिषेक और पूजा से पूर्व इस पूजा प्रारंभ विधि को पढ़ना चाहिए)

निःसंग हो हे नाथ! आप दर्श को आया।
स्नान त्रय से शुद्ध धौत वस्त्र धराया।।
त्रैलोक्य तिलक जिनभवन की वंदना करूँ।
जिनदेवदेव को नमूँ सम्पूर्ण सुख भरूँ।।१।।

(जिनमंदिर के निकट पहुँचकर यह श्लोकर पढ़कर मंदिर को नमस्कार कर चारों दिशा में तीन-तीन आवर्त एक-एक शिरोनति करते हुए मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देवें, पुनः पैर धोकर अन्दर प्रवेश करें।)

ॐ ह्रीं हुं हुं णिसिहि स्वाहा।

यह मंत्र बोलकर मंदिर में प्रवेश कर नीचे लिखा मंत्र पढ़कर हाथ धोवें।

हाथ धोने का मंत्र —

ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा।

पुनः हाथ जोड़कर दर्शन स्तोत्र पढ़ें —

हे नाथ! आप दर्श करके हर्ष हो रहा।
आनन्द अश्रु झड़ रहे सब पाप धो रहा।।
जीवन सफल हुआ मैं आज धन्य हो गया।
प्रभु भक्ति से निज सौख्य में निमग्न हो गया।।२।।

पुनः ईर्यापथशुद्धि करें—

१. पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा हिन्दी पद्यानुवाद

ईर्यापथ शुद्धि (हिन्दी पद्यानुवाद)

-दोहा-

हे भगवन्! ईर्यापथिक, दोष विशोधन हेतु।
प्रतिक्रमण विधि मैं करूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१।।

-चौबोल छंद-

गुप्ति रहित हो षट्कायों की, मैं विराधना जो करता।
शीघ्र गमन प्रस्थान ठहरने, चलने में अरु भमण किया।।२।।
प्राणीगण पर गमन, बीज पर गमन, हरित पर चला कहीं।
मल मूत्रादि नासिका मल, कफ थूक विकृति को तजा कहीं।।३।।
एकेन्द्रिय द्वीइन्द्रिय त्रय-इन्द्रिय चउइन्द्रिय पंचेन्द्री।
जीवों को स्वस्थान गमन से, रोका या अन्यत्र कहीं।।४।।
रखा परस्पर पीड़ित कीना, एकत्रित कीना घाता।
ताप दिया या चूर्ण किया, कूटा मूर्च्छित कीना काटा।।५।।
ठहरे चलते फिरते को, छिन-भिन्न विराधित किया प्रभो।
गुणहेतू प्रायश्चित हेतू, उन्हें विशोधन हेतु प्रभो।।६।।
जब तक भगवत् अर्हत् के, णवकार मंत्र का जाप्य करूँ।
तब तक पापक्रिया अरु, दुश्चरित्र का बिल्कुल त्याग करूँ।।७।।

(९ बार णमोकारमंत्र का जाप्य करें)

-आलोचना-

भगवन्! ईर्यापथ आलोचन, करना चाहूँ मैं रुचि से।
पूर्वोत्तर दक्षिण पश्चिम, चउदिस विदिशा में चलने से।।

चउकर देख गमन भव्यों का, होता पर प्रमाद से मैं।
शीघ्र गमन से प्राण भूत अरु, जीव सत्त्व को दुःख दीने।।
यदि किया उपघात कराया, अथवा अनुमति दी रुचि से।
श्रीजिनवर की कृपा दृष्टि से, सब दुष्कृत मिथ्या होवें।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः शुद्धयतु स्वाहा। (बैठने की जगह पानी छिड़कें)

ॐ ह्रीं क्ष्वीं आसनं निक्षिपामि स्वाहा। (आसन बिछावें)

ॐ ह्रीं ह्युं ह्युं णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा। (आसन पर बैठें)

ॐ ह्रीं मौनस्थिताय स्वाहा। (मौन ग्रहण करें अर्थात् पूजा-पाठ के सिवाय अन्य बातें न करें)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा। (पूजा के बर्तन धोवें या उन पर जल छिड़कें)

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रतरजलेन शुद्धपात्रनिक्षिप्तपूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा। (पूजा सामग्री पर जल छिड़कें)

अथकृत्यविज्ञापना

भगवन्! नमोऽस्तु ते एषोऽहं जिनेन्द्रपूजावंदनां कुर्याम्।

पुनः सामायिक स्वीकार करें —

—बसंततिलका छंद—

संसार के भ्रमण से अति दूर हैं जो।
ऐसे जिनेन्द्रपद में नित ही नमूँ मैं।।
सम्पूर्ण सिद्धगण को सब साधुओं को।
वंदूँ सदा सकल कर्म विनाश हेतू।।१।।

है साम्यभाव सब प्राणी में हमारा।
है ना कभी किसी से मुझ वैर किंचित्।।
सम्पूर्ण आश तज के शुभभाव धारूँ।
संसार दुःख हर सामायिक करूँ मैं।।२।।

पुनः कार्य का विज्ञापन करें—

भगवन्! नमोऽस्तु प्रसीदन्तु प्रभुपादौ वंदिष्येऽहं। एषोऽहं तावच्च सर्वसावद्ययोगाद्विरतोऽस्मि।

अथ जिनेन्द्रपूजावंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीमद्सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

(तीन आवर्त एक शिरोनति करें पुनः मुक्ताशुक्ति मुद्रा से हाथ जोड़कर नीचे का पाठ पढ़ें)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहुमंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंतसरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि। ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(तीन आवर्त एक शिरोनति करें, ९ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करके पुनः तीन आवर्त एक शिरोनति करें)

-थोस्सामि स्तव-

(हिन्दी पद्यानुवाद)

स्तवन करूँ जिनवर तीर्थंकर, केवलि अनन्त जिन प्रभु का।
मनुज लोक से पूज्य कर्मरज, मल से रहित महात्मन् का।।१।।
लोकोद्योतक धर्म तीर्थंकर, श्री जिन का मैं नमन करूँ।
जिन चउवीस अर्हंत तथा, केवलि-गण का गुणगान करूँ।।२।।

(तीन आवर्त एक शिरोनति करें)

सिद्ध भक्ति पढ़ें-लघु सिद्धभक्ति

(हिन्दी पद्यानुवाद)

तप से सिद्ध नयों से सिद्ध, सुसंयमसिद्ध चरित सिद्धा।
ज्ञान सिद्ध दर्शन से सिद्ध, नमूँ सब सिद्धों को शिरसा।।

-अंचलिका-

हे भगवन्! श्री सिद्धभक्ति का, कायोत्सर्ग किया उसका।
आलोचन करना चाहूँ जो, सम्यग्रत्नत्रय युक्ता।।१।।
अठविधि कर्म रहित प्रभु, ऊर्ध्वलोक मस्तक पर संस्थित जो।
तप से सिद्ध नयों से सिद्ध, सुसंयमसिद्ध चरित सिद्ध जो।।२।।
भूत भविष्यत वर्तमान, कालत्रय सिद्ध सभी सिद्धा।
नित्यकाल मैं अर्चूं पूजूँ, वंदूँ नमूँ भक्ति युक्ता।।३।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण संपत होवे।।४।।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(यह पूजा प्रारंभ विधि हुई)

पंचामृत अभिषेक पाठ

(श्री पूज्यपाद आचार्य विरचित)
(पद्यानुवादकर्त्री-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती)

-शंभु छंद-

अर्हंत देव को प्रणमन कर, जल से स्नान कर शुद्ध हुआ।
सन्मंत्रस्नान व्रतस्नान कर, जिन गंधोदक से शुद्ध हुआ।।
आचमन अर्घ कर धुले धवल, धोती व दुपट्टे को पहने।
जिनमंदिर की त्रय प्रदक्षिणा कर, नमूँ शीश नत विधिवत् मैं।।१।।

जिनगृह के द्वार खोल वेदी का वस्त्र हटा प्रभु दर्श करूँ।
ईर्यापथ शुद्धि व सिद्ध भक्ति, विधि से कर सकलीकरण करूँ।
जिनयजन हेतु भूशुद्धि अर्चना द्रव्य पात्र अरु आत्म शुद्धि।
करके भक्ती से जिन अभिषव, प्रारंभूँ मैं कर त्रिधा शुद्धि।।२।।
(सौगंध्य संगत मधुव्रत झंकृतेन। संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ।।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृंदवंद्य। पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानां।।[१])

(यह श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से भगवान के चरणों में चंदन लगाकर उसी चंदन से अपने माथे में तिलक करें)

तिलक लगाने के मंत्र[२] —

१. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (ललाटे)
२. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (हृदये)
३. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (दक्षिणे भुजे)
४. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (वाम भुजे)

---

१. श्री अभयनंदि आचार्य विरचित अभिषेक पाठ से। २. श्री नेमिचंद्रप्रतिष्ठातिलक से।

५. ॐ ह्वां ह्वीं ह्वूं ह्वौं ह्वः णमो लोए सव्व साहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (कंठे)

(मात्र ललाट में ही तिलक लगाना हो, तो प्रथम मंत्र ही बोलें)

पूजन की थाली में स्वस्तिक बनाने की विधि—

निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए स्वस्तिक के चारों दिशाओं में अंक लिखें—

रयणत्तयं च वंदे, चउवीसजिणं च सव्वदा वंदे।
पंचगुरुणां वंदे, चारणचरणं सदा वंदे।।

-बसंततिलका छंद-

ॐ श्री जिनेन्द्र मुझ चित्त पवित्र कीजे।
था स्नानपीठ तव मेरु गिरीन्द्र ऊँचा।।
जन्माभिषेक करके सुर इन्द्र हर्षे।
मैं भी करूँ न्हवन आज प्रभो तुम्हारा।।३।।

ॐ ह्वीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा।

(प्रस्तावना हेतु पुष्पांजलि क्षेपण करें)

ॐ तीर्थकृत न्हवन भूमि पवित्र हेतू।
शुद्धी करूँ जल लिये बहु पुण्य संचूँ।।
अग्नि प्रजाल पुनि नाग सुतर्पणं भी।
श्री क्षेत्रपाल अर्चूं शुचि अर्घ देके।।४।।

ॐ ह्वीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थंकराय श्री शांतिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमो भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(जल छिड़क कर भूमि शोधन करना)

ॐ ह्वीं क्षीं अग्निं प्रज्वालयामि निर्मलाय स्वाहा।

ॐ ह्वीं वह्निकुमाराय स्वाहा।

ॐ ह्वीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा। (कपूर जलाना)

ॐ ह्वीं श्रीं क्षीं भूः नागेभ्यः स्वाहा। (नाग संतपर्ण करना)

ॐ ह्वीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा। (क्षेत्रपाल को अर्घ्य चढ़ाना)

(निम्न प्रकार से दर्भ स्थापना, अष्टविध अर्चा-भूमिपूजा करें।)

अर्हंत देव अर्चा विधि विघ्नहारी।
इन्द्रादि दस दिशि सुदर्भ धरूँ रुची से।।
यज्ञोपवीत बहु आभरणादि धारूँ।
भू अर्चके जिन जजूँ अब इंद्र होके।।५।।

ॐ ह्वीं क्रों दर्पमथनाय नमः स्वाहा। (पुष्पांजलिः)

ॐ ह्वीं नीरजसे नमः स्वाहा। (जलं)

ॐ ह्वीं शीलगंधाय नमः स्वाहा। (चंदनं)

ॐ ह्वीं अक्षताय नमः स्वाहा। (अक्षतं)

ॐ ह्वीं विमलाय नमः स्वाहा। (पुष्पं)

ॐ ह्वीं परमसिद्धाय नमः स्वाहा। (नैवेद्यं)

ॐ ह्वीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा। (दीपं)

ॐ ह्वीं श्रुतधूपाय नमः स्वाहा। (धूपं)

ॐ ह्वीं अभीष्टफलदाय नमः स्वाहा। (फलं)

ॐ ह्वीं भूमिदेवतायै नमः अर्घ्यं.....।

(निम्न मंत्रों को पढ़कर यज्ञोपवीत धारण करें) आभूषण-मुकुट, हार, मुद्रिका आदि पहनें)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा।

ॐ ह्रीं इन्द्रोऽहं स्वाहा। (यह मंत्र बोलकर मैं इन्द्र हूँ ऐसा समझें)

ये चार स्वर्ण कलशे जल से भरे हैं।
ये भव्य क्षेमकर चारहि कोण थापूँ।।
श्री मेरु पे रुचिर पांडुक है शिला जो।
श्रीपीठ तद्वत् सुथाप सुधोय पूजूँ।।६।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा।

(चार कोनों में चार कलश स्थापित करना।*)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रौं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा।

(कलशों को अर्घ चढ़ाना)

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठः ठः श्रीपीठं स्थापयामि स्वाहा।

(अभिषेक के लिए जलोट[१] या थाली स्थापित करना)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन श्रीपीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

---

* जल शुद्धिकरण मंत्र-ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीक-गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरित्हरिकांता-सीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णकूलारूप्यकूलारक्ता-रक्तोदापयोधिशुद्धजलंसुवर्णघटं-प्रक्षालितनवरत्नगंधाक्षतपुष्पार्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा। इति जलेन प्रसिंच्य पवित्रीकरणं।

१. जिसमें भगवान को विराजमान कर अभिषेक करते हैं उसे श्रीपीठ कहते हैं, उसे जलोट भी कहते हैं।

(जल से श्रीपीठ का प्रक्षालन करना)

ये नीर चंदन सुअक्षत पुष्प लेके।
नैवेद्य दीप वर धूप मधुर फलों से।।
श्री पीठ अर्चन करूँ जिननाथ की ये।
इंद्रादिवंद्य मुनिवंदित सौख्यकारी।।७।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा। (श्रीपीठ के लिए अर्घ चढ़ाना)।

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय स्वाहा। (श्रीपीठ में दर्भ स्थापित करना या पुष्पांजलि क्षेपण करना)

श्रीकारवर्ण लिखके वसु अर्घ अर्पूं।
जैनेन्द्रबिम्ब इस पे वर भक्ति थापूँ।।
श्रीपाद पद्मयुग को प्रक्षाल करके।
त्रैलोक्य ईश पद पंकज को नमूँ मैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीलेखनं करोमि स्वाहा। (श्री पीठ में श्रीकार लिखें)

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीयंत्रं पूजयामि स्वाहा। (श्रीकार के लिए अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं ध्यातृभिः अभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं धात्रे वषट् नमः स्वाहा। (जिन प्रतिमा के चरण का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा। (श्रीवर्ण पर जिनप्रतिमा को विराजमान करें)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पवित्रतरजलेन पात्रद्रव्यशुद्धिं करोमि स्वाहा। (जल छिड़ककर पात्र व द्रव्य की शुद्धि करें)

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रजलेन श्रीपादप्रक्षालनं करोमि स्वाहा। (जिनप्रतिमा के चरणों का प्रक्षालन करें)

दूर्वादि धौत सित तंदुल स्वस्तिकादी।
सरसों समेत कर्पूर प्रजाल करके।।
रक्षामणी त्रिजग के जिनराज की मैं।
नीराजना विधि सुआरति मैं उतारूँ।।९।।

ॐ ह्रीं क्रों समस्तनीराजनद्रव्यैर्नीराजनं करोमि दुरितमस्माकमपहरतु भगवान् स्वाहा।

(थाली में दूब, अक्षत, सरसों, स्वस्तिक आदि रखकर कपूर जलाकर आरती उतारते हुए नीराजना करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पाद्यमर्घ्यं करोमि नमोऽर्हदभ्यः स्वाहा।

(अर्घ चढ़ावें)

पानीय गंध सित तंदुल पुष्पमाला।
मिष्ठान्न दीप वर धूप फलादि भरके।।
अर्हंत देव चरणाब्जयुगं जजूँ मैं।
इंद्रादिवंद्य जिनवंद निजात्म पाऊँ।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः परमात्मकेभ्यः स्वाहा। (चंदनं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनादिनिधनेभ्यः स्वाहा। (अक्षतं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा। (पुष्पं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतज्ञानेभ्यः स्वाहा। (नैवेद्यं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतदर्शनेभ्यः स्वाहा। (दीपं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतवीर्येभ्यः स्वाहा। (धूपं)
ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतसौख्येभ्यः स्वाहा। (फलं)
उदकचंदनतंदुल.....अर्घ्यं।

(यह अष्टविध अर्चन हुआ)

पूर्वादि दशदिक् क्रमात् दश दिक्कपाला।
ये इंद्र अग्नि यम नैऋत वरुण नामा।।
वायू कुबेर ईशान फणीन्द्र चंद्रा।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधा लो यज्ञभागा।।११।।

ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्णसर्वलक्षण-संपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारा इन्द्राग्नियमनैर्ऋतवरुणवायुकुबेरेशानधरणेन्द्रसोमनामदशलोकपाला आगच्छत आगच्छत संवौषट् स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः मम अत्र सन्निहिता भवत भवत वषट् इदं अर्घ्यं पाद्यं गृह्णीध्वं गृह्णीध्वं ॐ भूर्भुः स्वः स्वाहा स्वधा।

(इन्द्र आदि दस दिक्पाल देवों को अर्घ चढ़ावें)

अथ बिरुदावलिः

(गुर्वावली)

श्रेयःपद्मविकासवासरमणिः स्याद्वादरक्षामणिः।
संसारोरगदर्पगारुडमणिर्भव्यौघ चिंतामणिः।।
अश्राँताक्षयशांतमुक्तिरमणिःसामंतमुक्तामणिः।
श्रीमान् देवशिरोमणिर्विजयते श्रीवीतरागः प्रभुः।।१।।

आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानदत्तावधानानां खण्डस्फुटितजीर्णजिनचैत्यचैत्यालयोद्धारणैकधीराणां यात्राप्रतिष्ठादि-सप्तक्षेत्रधनवितरणैकशीलानां तर्कव्याकरणच्छंदोलंकारसाहित्य-संगीतकाव्यनाटकाभिधानशास्त्रसरोजर-सास्वादनमदोत्करमधुकर-समाभरणानां निजकुलकमलविकाशनैक-मार्तंडावताराणां श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरदेवपदकमलाराधकानां श्रीमूलसंघपुण्यार्थं मंगलार्थं तुष्टिपुष्ट्यारोग्यार्थं भव्यजनक्रियमाणे जिनेश्वराभिषेके सर्वे जनाः सावधाना भवंतु। पूर्वाचार्येभ्यो नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।।

ॐ धर्म चक्रपति के अभिषेक हेतू।
संगीत गीत युत वाद्य सुघोष फैला।।
मैं पूर्ण कुंभ विधि से कर में उठाऊँ।
उद्धार हेतु यह कुंभ जगत्त्रयी का।।१२।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्णकलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(जल से भरा पूर्ण कलश हाथ में उठावें)

जल से अभिषेक-

जैनेन्द्र देव अभिषेक विधि करूँ मैं।
कल्याण नीरभृत निर्झरणी यही है।।
त्रैलोक्य भव्यजन को सुख शांति देती।
स्वामी करूँ न्हवन मैं जल से तुम्हारा।।१३।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो जलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

नारियल के जल से अभिषेक-

जो चन्द्रकांतमणि के जल सम धवल है।
पीयूषवत् अतुल स्वाद लिये अमल है।।
इस नालिकेर रस से अभिषेक करके।
चाहूँ प्रभो! मुझ वचन इसके सदृश हों।।१४।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो नालिकेररसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

इक्षुरस का अभिषेक-

तत्काल पेलकर पात्र भरा लिया है।
माधुर्य पूर्णयुत ये रस इक्षु का है।।
हे नाथ! आप अभिषेक करूँ रुचि से।
मेरे वचन त्रिजग कर्ण रसायनं हों।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो इक्षुरसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

घृत से अभिषेक-

अत्यंत पुष्टिकर ये घृत तृप्तिकारी।
संताप दूरकर अतिशय कांति देता।।
घी से जिनेन्द्र अभिषेक करूँ अभी मैं।
दीर्घायु हो अतुल शक्ति बढ़े इसी से।।१६।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो घृताभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

दूध से अभिषेक-

पूर्णा शशांक किरणों सम कांति धारे।
ये दूध उत्तम रसायन विश्व में है।।
हे नाथ! क्षीरघट से अभिषेक करके।
मैं कामधेनु सम वांछित प्राप्त कर लूँ।।१७।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो दुग्धाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

दधि से अभिषेक-

जैनेन्द्र कीर्ति यह एकत्रित हुई क्या ?
क्षीरोदधी पय हुआ बस बर्फ सम ही।।
अति मंगलीक दधि से अभिषेक करके।
त्रैलोक्य मंगलमयी निज सौख्य पाऊँ।।१८।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं ध्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो दधिअभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

सर्वौषधि से अभिषेक-

एला लवंग कर्पूर सुचंदनादी।
नाना सुगंधवर वस्तु मिलाय करके।।
सर्वौषधि मिलितसार कषाय जल से।
संसाररोगहर हेतु करूँ न्हवन मैं।।१९।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं त्रिभुवनपतेः सर्वौषधिअभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

चार कोण कलशों से अभिषेक-

तृष्णा निवारण करें बहु पुण्यकारी।
मांगल्यद्रव्य वर मिश्रित कोण कलशे।।
त्रैलोक्य नाथ जिन का अभिषेक करके।
पा जाऊँ शीघ्र निज के सुचतुष्टयों को।।२१।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमोऽर्हते भगवते मंगलोत्तमकरणाय कोणकलशजलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

चंदन विलेपन-

त्रैलोक्य पुण्यप्रद चंदन को घिसा है।
सौभाग्यकारि जिनबिम्ब विलेप हेतू।।
सौरभ्य प्राप्त कर लूँ निज के गुणों की।
हे नाथ! आप गुणसौरभ विश्वव्यापा।।२०।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं ध्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो कल्कचूर्णैः उद्वर्तनं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

पुष्पवृष्टि-

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।) (पुष्पवृष्टि करें)

आरती-

ॐ ह्रीं क्रों समस्तनीराजनद्रव्यैः नीराजनं करोमि दुरितं अस्माकं अपहरतु भगवान् स्वाहा। (आरती उतारें)

सुगंधित जल से अभिषेक-

कर्पूर चूर्ण मलयागिरि चंदनादी।
नाना सुगंधिकर द्रव्य मिलाय लीने।।
गंधाम्बु से नित करूँ अभिषेक प्रभु का।
कैवल्यज्ञानमय आतम ज्योति पाऊँ।।२२।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हं असि आ उ सा नमः मम सर्वशांतिं कुरु कुरु, मम सर्वतुष्टिं कुरु कुरु, मम सर्वपुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा स्वधा। उदकचंदन.....अर्घ्यं।

शांतिधारा*

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (.....)[१] सर्वज्ञानावरण कर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदर्शनावरण कर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववेदनीयकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमोहनीयकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वायुःकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वनामकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वगोत्रकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वान्तरायकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वक्रोधं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमानं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमायां छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्व लोभं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमोहं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वरागं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वद्वेषं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वगजभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसिंहभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वाग्निभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसर्पभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वयुद्धभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसागरनदीजलभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वनिगडादिबंधनभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वत्रि-

* रचयित्री-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती। १. जिनके लिए शांतिधारा करा रहे हों, उनका नाम बोलें।

चक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभूकंपदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभूतपिशाचव्यंतरडाकिनीशाकिन्यादिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वधनहानिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वव्यापारहानिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वराजभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वचौरभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुष्टभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वशत्रुभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वशोकभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्व-साम्प्रदायिकविद्वेषं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववैरं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुर्भिक्षं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमनोव्याधिं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वआर्तरौद्रध्यानं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुर्भाग्यं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वायशः छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वपापं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्व अविद्यां छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वप्रत्यवायं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वकुमतिं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वक्रूरग्रहभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुःखं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वापमृत्युं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर-शिखामणित्रिभुवनगुरूत्रिभुवनजनता-अभय-दानदायकसार्वभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहतिमहावीरसन्मति-वीरातिवीर-वर्धमाननामालंकृतश्रीमहावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे

भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे.....प्रदेशे.....नामनगरे वीरसंवत्..... तमे..... मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे नित्य पूजावसरे (..... विधानावसरे[१]) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्य शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! सुभिक्षं कुरू कुरू मनः समाधिं कुरु कुरु धर्मशुक्लध्यानं कुरु कुरु सुयशः कुरु कुरु सौभाग्यं कुरु कुरु अभिमतं कुरु कुरु पुण्यं कुरु कुरु विद्यां कुरु कुरु आरोग्यं कुरु कुरु श्रेयः कुरु कुरु सौहार्दं कुरु कुरु सर्वारिष्ट ग्रहादीन् अनुकूलय अनुकूलय कदलीघातमरणं घातय घातय आयुर्द्राघय द्राघय सौख्यं साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः। परमपवित्र-सुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्य सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

गंधोदक लगाने का श्लोक व मंत्र-

मानो हिमाचल महागिरि से गिरी है।
आकाशगंग जलधार पवित्र गंगा।।
अर्हंत का न्हवन नीर इसे नमूँ मैं।
मैं उत्तमांग उर में दृग में लगाऊँ।।२३।।

ॐ नमोऽर्हत्परमेष्ठिभ्यः मम सर्वशांतिर्भवतु स्वाहा।

(आत्मा को पवित्र करें—गंधोदक को सिर पर, ललाट में, गले में, वक्षस्थल में व नेत्रों में लगावे।)

ॐ ह्रीं ध्यातृभिरभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नवदेवता पूजन

—गीता छन्द—

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक—

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतू, पुंज नवसु चढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा — **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांती हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य —**ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।** (९, २७ या १०८ बार)

जयमाला

—सोरठा—

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।१।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देव देव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।२।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।३।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।४।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।५।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।६।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।७।।

—दोहा—

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

—गीता छंद—

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।९।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

पूजा अन्त्य विधि

(हिन्दी पद्यानुवाद)

(अनंतर मणि, मूंगा, चांदी आदि की माला से या अंगुली से अथवा १०८ पुष्पों से नीचे लिखे मंत्र का जाप्य करें। समयाभाव में ९ बार मंत्र पढ़कर पुष्प चढ़ावें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा।

पुनः चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति और शांतिभक्ति पढ़ें—

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं श्रीचैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

(तीन आवर्त और एक शिरोनति करें)

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।।

चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगल, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।

जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि। ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।।

(तीन आवर्त एक शिरोनति करें । ९ बार णमोकरमंत्र का जाप करें। पुनः ३ आवर्त एक शिरोनति करके थोस्सामिस्तव पढ़ें)

थोस्सामि स्तवन (हिन्दी पद्यानुवाद)

स्तवन करूँ जिनवर तीर्थंकर, केवलि अनंत जिन प्रभु का।
मनुज लोक से पूज्य कर्मरज, मल से रहित महात्मन् का।।१।।

लोकोद्योतक धर्म तीर्थंकर, श्रीजिन का मैं नमन करूँ।
जिन चउवीस अर्हंत तथा केवलि-गण का गुणगान करूँ।।२।।

(तीन आवर्त एक शिरोनति करें।)

लघु चैत्यभक्तिः-(हिन्दी पद्यानुवाद)

नव सौ पचीस कोटि त्रेपन, लाख सताइस सहस प्रमाण।
नव सौ अड़तालिस जिन प्रतिमा, त्रिभुवन में हैं करूँ प्रणाम।।
ज्योतिष व्यंतर के गृह में, शाश्वत जिन प्रतिमा संख्यातीत।
पंच शतक धनु तुंग पूर्वमुख, पर्यंकासन वंदूं नित्य।।१।।

अंचलिका-(हिन्दी पद्यानुवाद)

भगवन्! चैत्यभक्ति अरु कायोत्सर्ग किया उसमें जो दोष।
उनकी आलोचन करके को, इच्छुक हूँ धर मन संतोष।।
अधो मध्य अरु ऊर्ध्वलोक में, अकृत्रिम कृत्रिम जिनचैत्य।
जितने भी हैं, त्रिभुवन के, चउविध सुर करें भक्ति से सेव।।१।।

भवनवासि व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक सुर परिवार सहित।
दिव्यगंध दिव पुष्प आदि से, दिव्य न्हवन करते नित प्रति।।
अर्चें पूजें वंदन करते नमस्कार वे करें सतत।
मैं भी उन्हें यहीं पर अर्चूं पूजूं वंदूं नमूँ सतत।।२।।

दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय हो मम बोधि लाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधि मरणं मम जिनगुण संपत होवे।।३।।

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं पंचमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

(णमो अरिहंताणं.....आदि पढ़कर ९ महामंत्र जपकर थोस्सामिस्तव पढ़कर नीचे लिखी पंचगुरु भक्ति पढ़ें।)

लघु पंचगुरुभक्ति-(हिन्दी पद्यानुवाद)

प्रातिहार्य से युत अर्हंतों, को अठगुण युत सिद्धों को।
वंदूं अठ प्रवचनमाता से, संयुत श्री आचार्यों को।।
शिष्यों से युत पाठकगण को, अष्ट योग युत साधू को।
वंदूं पंचमहागुरुवर को, त्रिकरण शुचि से मुद मन हो।।

अचंलिका-(हिन्दी पद्यानुवाद)

-दोहा-

भगवन्! पंचमहागुरु भक्ति कार्यात्सर्ग।
करके आलोचन विधि करना चाहूँ सर्व।।१।।

अष्टमहाशुभ प्रातिहार्य, संयुत अर्हंत जिनेश्वर हैं।
अष्टगुणान्वित ऊर्ध्वलोक, मस्तक पर सिद्ध विराज रहें।।
अठ प्रवचनमाता संयुत हैं, श्री आचार्य प्रवर जग में।
आचारादिक श्रुतज्ञानामृत, उपदेशी पाठकगण हैं।।२।।
रत्नत्रय गुण पालन में रत, सर्वसाधु परमेष्ठी हैं।
नितप्रति अर्चूं पूजूं वंदूं, नमस्कार मैं करूं उन्हें।।
दुःखों का क्षय कर्मो का क्षय, हो मम बोधिलाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण संपत् होवे।।३।।

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं श्रीशांतिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

(णमो अरिहंताणं.....आदि पढ़कर ९ महामंत्र जपकर थोस्सामिस्तव पढ़कर शाांतिभक्ति पढ़ते हुए पुष्प क्षेपण करना चाहिये।)

शांति भक्ति-(हिन्दी पद्यानुवाद)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजैं।।१।।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।२।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।३।।
शांतिजिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।४।।

पूजें जिन्हें मुकुट-हार किरीट लाके,
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहु शांति सदा अनूप।।५।।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे।।६।।
होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पे, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।।
होवे चोरी न मारी, सुसमय बरतै हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।७।।

—दोहा —

घाति कर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज,
शांति करें ते जगत में, वृषभादिक जिनराज।।८।।
शास्त्रों को हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।९।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौलौं न पाऊँ।।१०।।

—आर्य्या छन्द—

तव पद मेरे हिय में मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहौ प्रभु जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।११।।

अक्षर पद मात्रा से दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुख से।।१२।।

हे जगबन्धु जिनेश्वर पाऊँ तव शरण चरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।१३।।

(तीन बार शांतिधारा देवें तथा नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

—विसर्जन पाठ—

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तें परमगुरु, सो सब पूरन होय।।१।।

पूजनविधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करो भगवान।।२।।

मंत्र-हीन धन-हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।३।।

आये जो-जो देवगण, पूजें भक्ति प्रमाण।
सो अब जावहु कृपा कर, अपने-अपने थान।।४।।

नमोऽस्तु जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं सिद्धचैत्यपंचगुरुशांतिभक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिक-दोषविशुद्ध्यर्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

(णमो अरिहंताण....आदि से लेकर ९ जाप्य व थोस्सामिस्तव पढ़कर समाधि भक्ति पढ़ें।)

समाधि भक्ति-(हिन्दी पद्यानुवाद)

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।
शास्त्रों का अभ्यास, जिनेश्वर नमन सदा सज्जन संगति।
सच्चरित्र के गुण गाऊं अरु, दोष कथन में मौन सतत।।
सबसे प्रियहित वचन कहूँ, निज आत्मतत्त्व को नित भाऊं।
यावत् मुक्ति मिले तावत्, भव भव में इन सबको पाऊँ।।१।।

तव चरणांबुज मुझ मन में, मुझ मन तव लीन चरण युग में।
तावत् रहे जिनेश्वर यावत, मोक्ष प्राप्ति नहिं हो जग में।।२।।

अक्षर पद से हीन अर्थ, मात्रा से हीन कहा जो मैं।
हे श्रुत मातः! क्षमा करो, मम सब दुःखों का क्षय होवे।।३।।

दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, होवे बोधिलाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण संपत् होवे।।४।।

(पुनः पाँच बार शांति मंत्र का उच्चारण करें।)

शांतिमंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

पुनः गणधर वलय मंत्र पढ़े—

गणधरवलय मंत्र

णमो जिणाणं, णमो ओहिजिणाणं, णमो परमोहि-जिणाणं, णमो सव्वोहिजिणाणं, णमो अणंतोहिजिणाणं, णमो कोट्ठबुद्धीणं, णमो बीजबुद्धीणं, णमो पादाणु-सारीणं, णमो संभिण्णसोदाराणं, णमो सयंबुद्धाणं, णमो पत्तेयबुद्धाणं,

णमो बोहियबुद्धाणं, णमो उजुमदीणं, णमो विउलमदीणं, णमो दसपुव्वीणं, णमो चउदस-पुव्वीणं, णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं, णमो विउव्व-इड्ढि-पत्ताणं, णमो विज्जाहराणं, णमो चारणाणं, णमो पण्णसमणाणं, णमो आगास-गामीणं, णमो आसीविसाणं, णमो दिट्ठिविसाणं, णमो उग्गतवाणं, णमो दित्ततवाणं, णमो तत्ततवाणं, णमो महातवाणं, णमो घोरतवाणं, णमो घोरगुणाणं, णमो घोर-परक्कमाणं, णमो घोरगुण-बंभयारीणं, णमो आमोसहिपत्ताणं, णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं, णमो जल्लोसहिपत्ताणं, णमो विप्पोसहिपत्ताणं, णमो सव्वोसहिपत्ताणं, णमो मणबलीणं, णमो वचिबलीणं, णमो कायबलीणं, णमो खीरसवीणं, णमो सप्पिसवीणं, णमो महुरसवीणं, णमो अमियसवीणं, णमो अक्खीण-महाणसाणं, णमो वड्ढमाणाणं, णमो सिद्धायदणाणं, णमो भयवदो महदिमहावीर-वड्ढमाणबुद्धरिसीणं, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं ह्रीं नमः स्वाहा।

यदि प्रमाद अज्ञान गर्व से, विधिवत क्रिया न मैंने की।
हे जिनेन्द्र! तुम पदप्रसाद से, क्रिया पूर्ण होवें सब ही।।
पंचपरमगुरु आदि यक्ष, आदिक का जो आह्वान किया।
सभी यथास्थान जाइये, यही विसर्जन विधी क्रिया।।१।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयाः सर्वयक्षयक्षीदिक्पालादि-अष्टाशीतिदेवादयः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः।

इति विसर्जन विधि

अन्त्य प्रार्थना -चौबोल छंद

मोह ध्वांत के नाशक विश्वप्रकाशी विशद दीप्तिधारी।
सन्मारग प्रतिभासक बुधजन को नित ही मंगलकारी।।
श्रीजिनचंद्र शांतिप्रद भगवन्! तापहरन तव भक्ति करूँ।
पुनः पुनः तव दर्शन होवे, यही याचना नित्य करूं।।१।।

।। इति नित्य पूजा विधिः।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-आओ बच्चों तुम्हें.....

आओ बच्चों! तुम्हें बतायें, परिचय प्रभु महावीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभू महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो.।।टेक.।।

कुण्डलपुर में पितु सिद्धारथ, माँ त्रिशला से जन्म लिया।
अपने शौर्य पराक्रम से, महावीर नाम को धन्य किया।।
वीर बहादुर बनना हो तो, नाम जपो श्रीवीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभू महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-2।।1।।

प्यारे बच्चों! तुम्हें देश में, महावीर युग लाना है।
कभी न अण्डा केक पेस्टी, चाकलेट नहिं खाना है।।
दीप जलाओ जन्मदिनों पर, भोजन खाओ खीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभू महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-2।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती का, सम्बोधन है तुम सबको।
शाकाहारी बनो बनाओ, तुम बच्चों! हर बालक को।।
बच्चा बच्चा करे "चन्दना", नमन सदा महावीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभू महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-2।।3।।

नवदेवता आरती

रचयित्री – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय नवदेव प्रभो, स्वामी जय नवदेव प्रभो।
शरण तुम्हारी आए, आरति हेतु प्रभो।। ॐ जय.।।

श्री अरिहंत जिनेश्वर, प्रथम देव माने। स्वामी प्रथम.....
दूजे देव कहाते, सिद्धशिला स्वामी।। ॐ जय.....।।१।।

चउसंघ नायक सूरी, तृतिय देवता हैं। स्वामी तृतिय.....
चौथे देव कहाए, उपाध्याय मुनि हैं।। ॐ जय.....।।२।।

सर्वसाधु हैं पंचम, श्री जिनधर्म छठा। स्वामी श्री जिन.....
सप्तम देव जिनागम, जिनवचसार कहा।। ॐ जय....।।३।।

श्री जिनचैत्य हैं अष्टम, जिनप्रतिमा जानो। स्वामी जिन.....
श्री जिनचैत्यालय को, देव नवम मानो।।ॐ जय....।।४।।

ढाई द्वीप के अन्दर, ये नव देव रहें। स्वामी ये नव.....
उनकी भक्ती करके, नर भी देव बनें।।ॐ जय....।।५।।

दो ही देवता आगे, द्वीपों में माने। स्वामी द्वीपों.....
श्री जिनचैत्य जिनालय, अकृत्रिम माने।।ॐ जय....।।६।।

नवदेवों की आरति, करते जो निश दिन। स्वामी करते....
लहें "चंदनामति" वे, सुख साधन प्रतिपल।।ॐ जय....।।७।।

पंचपरमेष्ठी की आरती

तर्ज – चांदनपुर के गाँव में बुला ले सांवरिया.....

घृत दीपक का थाल ले, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।
पाँचों परमेष्ठी की एवं चौबीसों जिनवर की।।घृत दीपक.।।टेक.।।

समवसरणयुत अरिहंतों की, सिद्धशिला के सिद्धों की–२
भवदुख नाशन हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।१।।

परमेष्ठी आचार्य उपाध्याय, साधु मोक्षपथगामी है–२
रत्नत्रय की प्राप्ति हित, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।२।।

मुनिवर ही तो कर्म नाश, अरिहंत–सिद्ध पद पाते हैं–२
कर्म विनाशन हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।३।।

चौबीस जिन जहाँ जन्मे एवं, जहाँ से मोक्ष पधारे हैं–२
उन सब पावन तीर्थ की, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।४।।

देव–शास्त्र–गुरू तीनों जग में, तीन रतन माने हैं–२
आतम निधि के हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।५।।

तीन लोक के जिनमन्दिर, कृत्रिम–अकृत्रिम जितने हैं–२
उन सबकी "चंदनामती", उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।६।।